अक्टूबर 2015

वर्ष 28 तृतीय अंक

सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

11 निर्णयों को सही करना सीखें

विशेष स्तम्भ

12 समसामयिक सामान्य ज्ञान
18 आर्थिक परिदृश्य
23 राष्ट्रीय परिदृश्य
27 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य
30 क्रीड़ा जगत्
35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य
36 अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं
38 सारभूत तत्व कोष

लेख

42 चिकित्सा लेख– जीवाणुनाशक दवाओं का अति उपयोग मानव जाति के लिए घातक
43 समसामयिक लेख–ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायु परिवर्तन के प्रभाव
44 शैक्षिक लेख–शैक्षिक निर्देशन की आवश्यकता
46 खाद्य समस्या लेख–भुखमरी : आखिर क्यों और कब तक ?
48 कौशल-विकास लेख–भारत की विशाल जनसंख्या का सकारात्मक पक्ष

हल प्रश्न-पत्र

49 उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग कनिष्ठ सहायक भर्ती परीक्षा, 2015

एल.आई.सी. सहायक प्रशासनिक अधिकारी परीक्षा, 2015

55 तर्कयोग्यता
58 सामान्य सचेतता एवं समसामयिक मामले
60 गणितीय अभियोग्यता
64 कम्प्यूटर ज्ञान
66 English Language

स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया प्रोबेशनरी ऑफीसर्स (प्रारम्भिक) परीक्षा, 2015

69 तर्कशक्ति परीक्षा
73 मात्रात्मक अभियोग्यता
78 English Language
82 रेलवे भर्ती सैल (गोरखपुर) ग्रुप 'डी' परीक्षा, 2014
89 रेलवे सुरक्षा बल कॉंस्टेबिल भर्ती परीक्षा, 2015
97 आगामी उत्तर प्रदेश चकबन्दी लेखपाल परीक्षा, 2015 हेतु विशेष हल प्रश्न
107 आगामी आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित बैंक लिपिकीय संवर्ग परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
117 आगामी एस.एस.सी. कॉंस्टेबिल भर्ती परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

सामान्य/विविध

122 वार्षिक रिपोर्ट 2014-15–(i) जैवप्रौद्योगिकी में अनुसंधान, विकास एवं प्रोग्राम्स : नई ऊँचाइयों की ओर
125 (ii) कृषि अनुसंधान एवं विकास क्षेत्र में उपलब्धियाँ : नई ऊँचाइयों की ओर
128 ज्ञान वृद्धि कीजिए
129 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

निर्णयों को सही करना सीखें

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

सटीक निर्णय सफलता की ऐसी सीढ़ी है जिस पर चढ़ना तो हर कोई चाहता है, लेकिन इसमें सफल वही होते हैं जो विवेकशील एवं धैर्यवान होते हैं.

कभी-कभी आवेश में लिए गए निर्णय भी सही सिद्ध हो सकते हैं. प्रकृति अपना काम बहुत ही विचित्र व विविध तरीकों से सम्पन्न कर लेती है. इंसान की अनेक खूबियों के बीच एक कमजोरी यह भी है कि वह भविष्य को नहीं देख पाता. इस अज्ञान के कारण वह अनेक बार गलत निर्णयों का शिकार भी हो जाता है व अनेक बार सही स्थितियों को भी पा लेता है. हमारा जीवन असंस्कृत है. अपूर्वानुमेय है. यहाँ कब कहाँ क्या होगा—कुछ कहा नहीं जा सकता है. ऐसे में हमारे निर्णय भी अँधेरे में फेंके गए तीर के समान ही हैं. जबकि हमें भविष्य का पता ही नहीं फिर भी हम सभी को सदैव कुछ न कुछ निर्णय तो लेने ही होते हैं. हमारे सारे निर्णय हमारे अतीत व भविष्य दोनों को प्रभावित करते हैं. प्रश्न यह है कि हमारे निर्णय सही होंगे या नहीं—ये हमें पता कैसे चले ?

इसका यूँ तो कोई सटीक समाधान दिया जाना मुश्किल है. मुश्किल इसलिए भी है कि हम सभी अपेक्षाओं के शिकार जो हैं. हमें लगता है कि हमारी आशा, इच्छा, कल्पना व अपेक्षा के अनुरूप जवाब मिला, परिस्थितियाँ मिलीं तब तो निर्णय सही हुआ अन्यथा गलत. किन्तु हमारी अपेक्षाएँ ही सम्यक् हों, ऐसा जरूरी तो नहीं. हमारी अपेक्षाएँ अधूरे ज्ञान की, आधी-अधूरी जानकारियों की उपज हैं, इस कारण वे निर्णय का मापदण्ड नहीं हो सकती हैं और फिर किसी भी निर्णय का परिणाम व प्रभाव मात्र तात्कालिक ही नहीं होता, दूरगामी भी होता है. ऐसे में सुदूर भविष्य के अज्ञात पृष्ठों में क्या छिपा हुआ है, ये जानने में असमर्थ हमारी मति भला निर्णय की सटीकता को कैसे समझ पाएगी. फिर भी हम ऐसा चाहते हैं कि हमारे निर्णय सही हो, इसके लिए आवश्यक है कि हमारा चित्त संदेह से रहित हो. एक प्रसिद्ध जैन आचार्य द्वारा रचित दश वैकालिक सूत्र में ऐसा उल्लेख मिलता है कि 'जब कभी संदेह में हों कि यह करना ठीक है या नहीं ? इसे ग्रहण करूँ या नहीं ? ऐसे समय में ग्रहण न करो. संदेह युक्त चित्त से किसी कार्य को प्रारम्भ मत करो. कहा भी गया है कि—

आगाज जो अच्छा है,
तो अंजाम बुरा क्यों हो।
नादां है वे जो कहते हैं
अंजाम खुदा जाने।।

●●●